[illegible] शोध पत्रिका

ISSN No. 2395 - 0374

जनवरी 2015 अंक - 1

[illegible]जिक क्रान्ति में हिन्दी पत्रकारिता का योगदान"

डॉ० जीत सिंह

स. प्रो. हिन्दी

कु. मायावती राजकीय (पी.जी)महिला महाविद्यालय, बादलपुर (गौ.बु.नगर)

[illegible], मोरना, धामपुर

[illegible] एक रचनाशील विधा है, [illegible] को बदलना असम्भव है। अतः [illegible] दायित्वों और कर्तव्यों का [illegible] करना चाहिए क्योंकि उन्हीं के [illegible] के विकास का इतिहास [illegible] कवयित्रि महादेवी वर्मा [illegible] में समाज को प्रभावित [illegible] होती है, उसका आधार होता [illegible] जो हुआ, जो हो रहा है, जो [illegible] चाहिए अर्थात जिस परिवर्तन [illegible] इन सबका लेखा जोखा पत्रकार [illegible] इस प्रकार पत्रकार भूत, [illegible] का समन्वय करता है। वह [illegible] बुद्धि और हृदय का [illegible] समाज को बदलने के लिए, [illegible] करने के लिए उसे तरह-तरह [illegible] पड़ता है, समाज के सामने [illegible] पड़ते हैं और इस प्रकार अपने [illegible] पड़ती है। उसका यह संघर्ष [illegible] करता है।

[illegible] पत्रकारिता का उद्देश्य सत्य [illegible] डालना है, वास्तविकताओं को उजागर करना है, पर उससे आशा की जाती है कि यह काम वह इस तरह से करें ताकि "बहुजनहिताय" की भावना सिद्ध हो और कल्याणकारी समाज के निर्माण में सहायता मिले। पत्रकार घटनाओं को केवल कैमरे की आँख से नहीं देखता बल्कि एक विवेकशील व्यक्ति, समाज को दिशा देने वाले नेता, समाज को परिस्कार और उन्नयन की साधना में रत एक योगी की आँख से देखता है।

वर्तमान युग सूचना क्रन्ति का प्रगतिशील युग है। जब युग बदलता है तब उसके आदर्श बदलते हैं, उसके मूल्य बदलते हैं उसकी जीवन पद्धति बदलती है और ये सारे बदलाव युग की आवश्यकताओं के परिप्रेक्ष्य में होते हैं। सत्य तो यह है कि मानदण्ड एवं स्वरूप कभी स्थिर नहीं रहते अपितु युग की गति के साथ वे भी गतिमान होते हैं।

समाचार पत्र-पत्रिकाएँ मानव जीवन की आवश्यकता का एक जरूरी अंग बनते जा रहे हैं। कहाँ, कब और क्या घटित हो रहा है? कौन देश, समाज या संगठन क्या कर रहा है? कौन किस तरह प्रगति के नए आयाम छू रहा है?